सी एन सुब्रह्मण्यम्

एक घड़ा और गुत्थी सौ

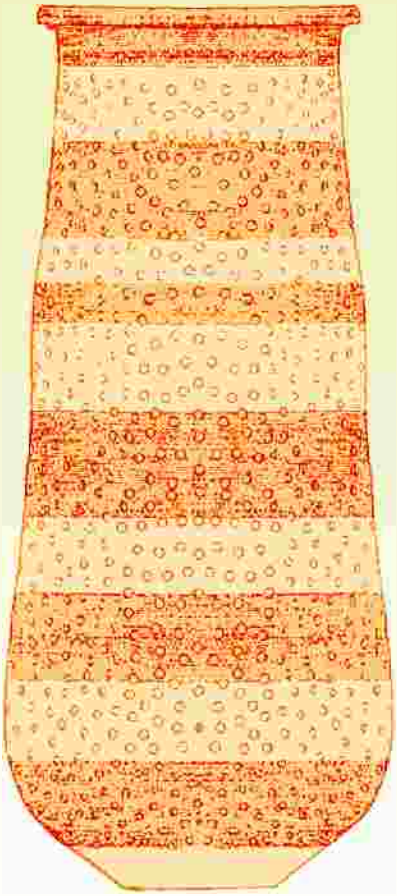

चित्र 1

मिट्टी से बना यह ऊँचा घड़ा (चित्र 1) लगभग 4000 साल पुराना है। जैसा कि तुम देख रहे हो, पूरे घड़े में छेद या सुराख बने हुए हैं। यह सिन्धु घाटी के किसी शहर के खण्डहर से मिला है। ऐसे कई घड़े मिले हैं। इन घड़ों का उपयोग किस काम के लिए किया जाता होगा?

उस समय की कोई पुस्तक तो बची नहीं है जिसे पढ़कर हम बता सकें कि इन सुराखदार बर्तनों का उपयोग क्या रहा होगा। इस मामले में इतिहासकारों ने ज़रूर कुछ अटकलें लगाई हैं – कोई कहता कि इससे वे लोग मछली पकड़ते होंगे। यानी नदी-नालों में मछली पकड़ने के लिए यह जाल की तरह काम में लाया जाता होगा।

कोई और कहता, नहीं नहीं, इससे वे अपने देवताओं को धूप देते होंगे।

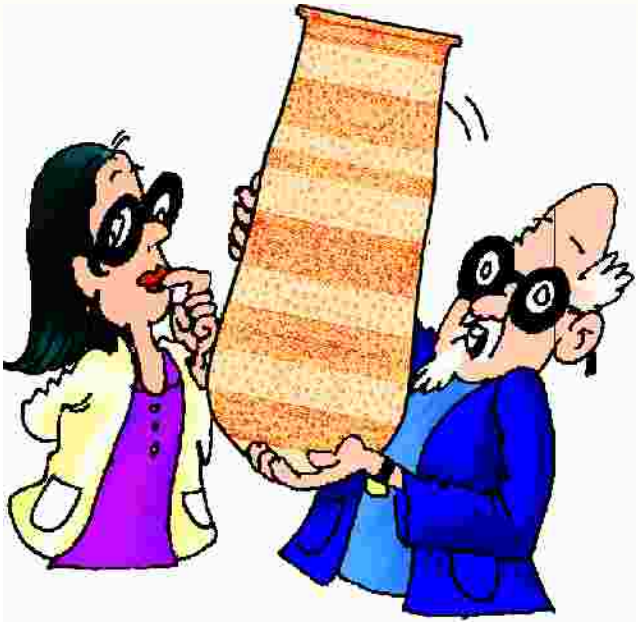

कुछ और लोगों ने कहा, अगर ये ज़्यादा संख्या में नदी-नालों के किनारे मिले हैं तो मछली पकड़ने के काम आते होंगे, और अगर पूजा स्थल या मन्दिरों में मिले हैं तो धूप देने के काम आते होंगे। अब समस्या यह है कि सिन्धु घाटी के खण्डहरों में कोई खास पूजा स्थल या मन्दिर जैसे भवन या कमरे नहीं मिले हैं। और छेद वाले घड़े केवल नदी किनारे ही नहीं बल्कि सभी जगहों पर मिले हैं।

तुम्हें क्या लगता है, इस तरह के बर्तनों के क्या-क्या उपयोग किए जाते होंगे?

चित्रः अतनु राय

एक घड़ा मोती से भरा

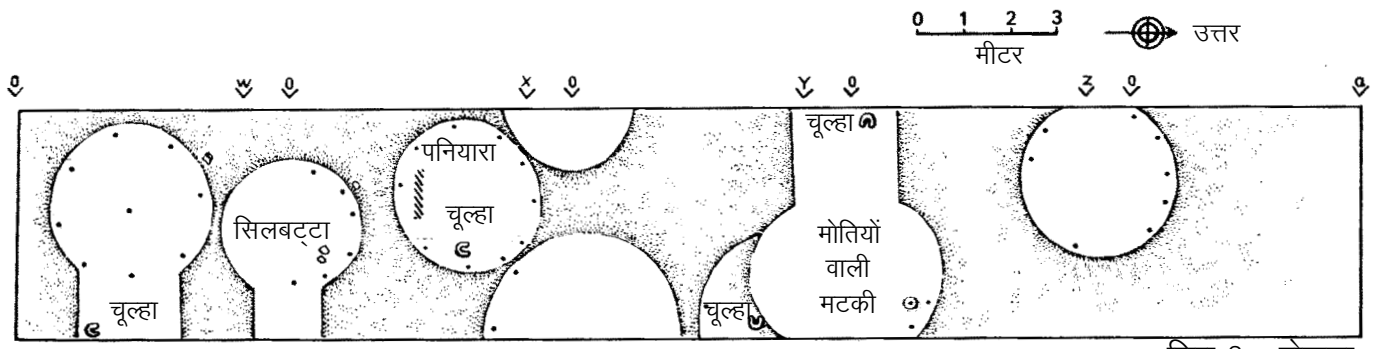

चित्र 2 - ज़ेकड़ा

ये अवशेष सिन्धु घाटी के प्रसिद्ध शहरों से दूर, बहुत दूर, गुजरात में कच्छ के एक छोटे-से गाँव ज़ेकड़ा के हैं (चित्र 2)। यह गाँव सिन्धु घाटी सभ्यता के ही समय का है। इस गाँव में छोटी-छोटी गोल झोपड़ियाँ मिली हैं। घर घास-फूस के बने थे। इनमें शायद गरीब किसान या चरवाहे रहते होंगे। लेकिन दो झोपड़ियाँ कुछ खास थीं। उनमें रहने वालों ने झोपड़ी के फर्श के नीचे एक-एक मटकी गाड़ रखी थी। उसमें क्या था?

चित्र 3 - इसके अन्दर क्या होगा?

इतिहासकारों ने जब इस मटकी के ढक्कन को बड़े एहतियात से खोलकर देखा तो अन्दर एक छोटी-सी मटकी और मिली! (चित्र 4)

चित्र 4 - बीच में रखी छोटी मटकी बड़ी मटकी के अन्दर थी। बड़ी मटकी को मिट्टी के लौंदे से ढँका हुआ था।

उसके अन्दर...?

इन मटकियों के अन्दर ऐसा क्या खज़ाना था? हीरे? सोने के सिक्के?

बारीक राख! और उस राख में दबे थे हज़ारों बारीक मोती। इनमें तार पिरोकर मालाएँ बनाई जा सकती थीं। मोती स्टीयेटाईट नामक पत्थर से बने थे।

चित्र 5 - स्टीयेटाईट मोती। इस चित्र में इन्हें 15 गुना बढ़ाकर दिखाया गया है। यानी ये बारीक सेव (सिवैंयों) के साइज़ के थे। जैसे सेव के छोटे-छोटे टुकड़े हों। बस एक मिली मीटर मोटे और दो या ढाई मिली मीटर लम्बे! इतने बारीक कि इस छोटी-सी मटकी के अन्दर लगभग सत्रह हज़ार मोती निकले! चकमक

चित्र

स्टीयेटाईट एक मुलायम पत्थर है। इसे बारीक पीसकर लुगदी बनाई जाती थी। फिर लुगदी से लम्बी, पतली सिवैयाँ बनाई जाती थीं। इन सिवैयों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर भट्टी में पकाकर कड़क किया जाता था। लेकिन इतनी पतली चीज़ में छेद कैसे किए होंगे? यह आज भी एक पहेली बनी हुई है।

सवाल है कि गुजरात के इन झोपड़ीवालों ने इन मनकों को क्यों इतना सम्हालकर ज़मीन के नीचे गाड़कर रखा होगा? ये मोती उनके लिए इतने कीमती क्यों थे? सिन्धु घाटी के शहरों में बने ये मोती उन्हें कैसे मिले होंगे?

ज़रा सोचकर हमें लिखो। मज़ेदार पत्रों को हम ***चकमक*** में छापेंगे और पुरस्कार भी मिलेगा!

पेड़ों में फूले पंछी

पक्षी जैसे दिखते इन फूलों का नाम है: *रीनाकैंथस नॅस्टस*। मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में इसे पलक जुही कहा जाता है। तुम्हारे इलाके में इसे किस नाम से जाना जाता है?
इन्हें देखकर किस पक्षी की याद आती है? क्या तुम किसी ऐसे पक्षी को जानते हो जो फूल-सा लगता हो?

दिसम्बर अंक की चित्र पहेली के हल

दि	सं	ब	र	■	प	तं	ग
■	त	■	स्सी	■	■	बू	ट
ता	रा	■	कू	■	छा	■	क
ला	■	क	द	म	ता	ल	■
चा	र	■	ना	ल	■	ता	श
बी	न	■	■	ह	■	■	■
■	■	छु	प	म	छु	पा	ई
ब	क	री	■	■	ट्टी	■	ख़